



संत कबीर नगर जनपद में साक्षरता की लैंगिक असमानता का भौगोलिक अध्ययन

अनिस सिंह, शोध छात्र

डॉ. दुर्गावती यादव, असिस्टेंट प्रोफेसर

भूगोल विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र. ।

सारांश: लैंगिक असमानता एक सामाजिक समस्या है जो पुरुषों और महिलाओं के बीच अधिकार, अवसर और संसाधनों की उपलब्धता में असमानता उत्पन्न करती है। शिक्षा के क्षेत्र में यह असमानता और भी चिंताजनक है क्योंकि शिक्षा ही एक व्यक्ति को सशक्त बनाने का मूल साधन है। जब लड़कियों के लिए समान शैक्षिक अवसर उपलब्ध नहीं होते, तो इससे न केवल उनका व्यक्तिगत उत्थान रुकता है, बल्कि समाज की समग्र विकास भी बाधित होती है। जिससे समाज एवं देश की प्रगति होना सम्भव नहीं है। देश तथा प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र व्याप्त लैंगिक असमानता को ध्यान में रखते हुए अध्ययन क्षेत्र संत कबीर नगर जनपद के विकासखण्डों का अध्ययन हेतु चुनाव किया गया है।

मुख्य शब्द : शिक्षा, साक्षरता, लैंगिक असमानता, विकासखण्ड ।

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में संत कबीर नगर में विकासखण्ड स्तर पर साक्षरता में लैंगिक असमानता की कालिक एवं क्षेत्रीय विषमता के विश्लेषण का प्रयास किया गया है। साक्षरता में लैंगिक समानता किसी एक परिवार या वर्ग का मुद्दा नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र के विकास से जुड़ा विषय है। यदि हम लड़कियों को समान अवसर प्रदान करें, तो वे न केवल अपनी जीवन बदल सकती हैं, बल्कि पूरे समाज को प्रगति की दिशा में आगे ले जा सकती हैं। लैंगिक समानता युक्त शिक्षा व्यवस्था से ही देश को सशक्त बनाने की नींव रख सकती है। साक्षरता में लैंगिक असमानता से अभिप्राय पुरुष(लड़के) और महिला(लड़कियों) के बीच शिक्षा के अवसर, संसाधन, पहुँच और भागीदारी में पाए जाने वाले भेदभाव से है साक्षरता में लैंगिक असमानता पर विभिन्न विद्वानों और संगठनों ने अलग-अलग दृष्टिकोण से कई परिभाषाएँ दी हैं। जिनमें कुछ इस प्रकार हैं। UNESCO (2003) के अनुसार, "शिक्षा में लैंगिक असमानता वह स्थिति है जहाँ स्त्रियों और पुरुषों के बीच शिक्षा प्राप्ति, भागीदारी और शैक्षिक उपलब्धियों में विषमता पाई जाती है।" नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन के अनुसार, "लड़कियों को शिक्षा से वंचित करना, लैंगिक असमानता की सबसे शर्मनाक अभिव्यक्ति है।" इस प्रकार हम कह सकते हैं कि साक्षरता में लैंगिक असमानता किसी व्यक्ति, समाज एवं देश के लिए सही नहीं है। किसी भी स्थान की जनसंख्या में प्रत्येक दशक में बड़ा परिवर्तन देखने को मिलता है। इसके साथ ही वहाँ के शिक्षा के क्षेत्र में भी बदलाव होता है। अध्ययन क्षेत्र में शिक्षा के प्रति बढ़ती जागरूकता, बढ़ते स्कूल-कालेज, लैंगिक असमानता में कमी एवं सरकार के प्रयासों से असमानता में गिरावट हुई है। अतः वर्तमान समय में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि

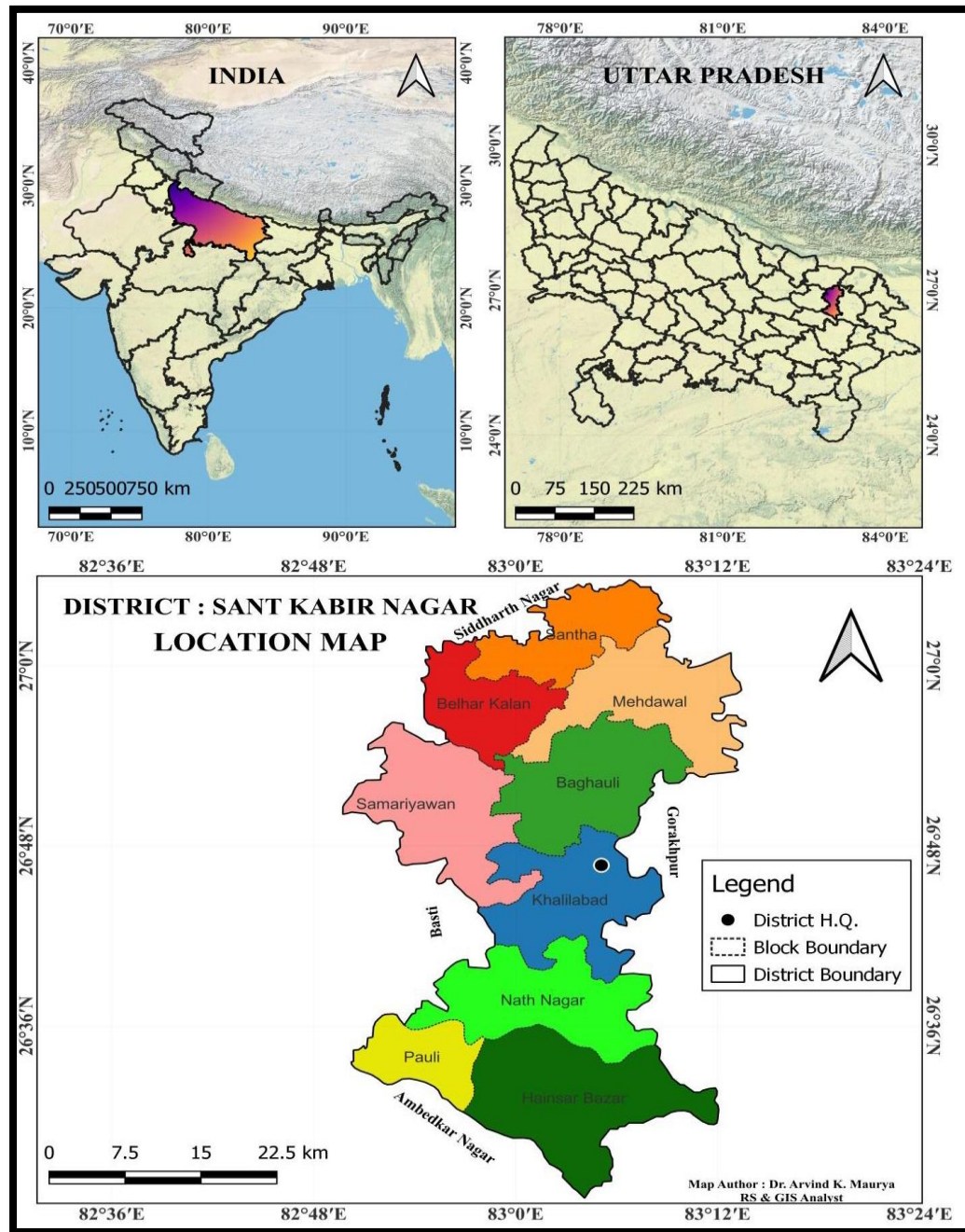
को देखते हुए अध्ययन क्षेत्र के विकासखण्डों में समग्र एवं संतुलित विकास हेतु शिक्षा में लैंगिक असमानता की प्रासंगिकता का भौगोलिक अध्ययन अत्यन्त आवश्यक विषय बन गया है।

भारत की साक्षरता में लैंगिक असमानता की स्थिति 2011

साक्षरता दर में अंतर: भारत में 2011 की जनगणना के अनुसार, पुरुषों की साक्षरता दर 82.14% थी जबकि महिलाओं की साक्षरता दर केवल 65.46% रही। स्कूल छोड़ने की दर: कई ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियाँ किशोरावस्था में ही स्कूल छोड़ देती हैं, विशेष रूप से माध्यमिक एवं स्नातक स्तर पर। उच्च शिक्षा में भागीदारी: विश्वविद्यालयों और तकनीकी संस्थानों में महिलाओं की उपस्थिति अभी भी सीमित है, विशेष रूप से विज्ञान, तकनीकी और इंजीनियरिंग क्षेत्रों में।

अध्ययन क्षेत्र

जनपद संत कबीर नगर भारत में उत्तर प्रदेश राज्य के पूर्वी हिस्से में अवस्थित है। यह अध्ययन क्षेत्र जनपद संत कबीर नगर सरयूपार मैदान के लगभग मध्य भाग में स्थित है। अध्ययन क्षेत्र संत कबीर नगर जनपद का अक्षांशीय विस्तार अक्षांशीय विस्तार $26^{\circ}30'$ उत्तर से $27^{\circ}10'$ उत्तरी अक्षांश तक तथा देशांतरीय विस्तार $82^{\circ}45'$ पूर्व से $83^{\circ}30'$ पूर्वी देशांतर तक है। जनपद का कुल क्षेत्रफल 1646 वर्ग किमी० है, जो कि उत्तर प्रदेश का 0.68 प्रतिशत है। जनपद का विस्तार उत्तर से दक्षिण में लंबाई 71 किमी० तथा पूर्व से पश्चिम में चौड़ाई 30 किमी० है। राजनैतिक दृष्टि से जनपद का सीमा निर्धारण उत्तर में सिद्धार्थनगर एवं दक्षिण में घाघरा नदी के सहारे अम्बेडकर नगर तथा पूर्व में गोरखपुर एवं पश्चिम में बस्ती जनपद करता है। इस प्रकार संत कबीर नगर जनपद गोरखपुर एवं बस्ती के मध्य अंतःस्थ जिले की भूमिका निभाता है। वर्तमान अवधि में जनपद की प्रशासनिक संरचना के अंतर्गत 3 तहसील, 9 विकासखण्ड, 85 न्याय पंचायत, 794 ग्राम पंचायत और 1727 गाँव की संख्या दर्ज है, जिसमें 1582 आबाद ग्राम तथा 145 गैर आबाद ग्राम हैं। अध्ययन क्षेत्र में कई नदियों का अपवाह तंत्र पाया जाता है, जिनमें घाघरा(सरयू), राप्ती, कुवाना, आमी तथा अन्य छोटी-छोटी नदियाँ पायी जाती हैं।



चित्र 1 : अवस्थिति मानचित्र संत कबीर नगर जनपद

उद्देश्य

अध्ययन क्षेत्र संत कबीर नगर जनपद के शिक्षा में लैंगिक असमानता के अध्ययन का प्रयास किया गया है। साक्षरता में निरंतर परिवर्तन होने के कारण प्रस्तुत शोध प्रपत्र में निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है:-

1. जनपद में विकासखण्ड स्तर पर साक्षरता दर में परिवर्तन का अध्ययन करना।
2. अध्ययन क्षेत्र में शिक्षा में आंकड़ा आधारित लैंगिक असमानता का विश्लेषण करना।
3. अध्ययन क्षेत्र में साक्षरता दर में लैंगिक असमानता का कालिक एवं स्थानिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करना।
4. शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक असमानता के कारणों की जानकारी प्राप्त करना।

5. अध्ययन क्षेत्र में आंकड़ों के विश्लेषण के माध्यम से शिक्षा में लैंगिक असमानता को कम करने के समाधान प्रस्तुत करना।

आंकड़ों के स्रोत एवं शोध विधितंत्र

प्रस्तुत शोध प्रपत्र द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों पर आधारित है। यह आंकड़े संत कबीर नगर जनपद की जनगणना हस्त पुस्तिका और जिला सांख्यिकीय पत्रिका से एकत्र किए गए हैं। जिनमें कुछ सूचनाएं मुख्य चिकित्सा अधिकारी (CMO) संत कबीर नगर जिला मुख्यालय और ब्लॉक मुख्यालयों से प्राप्त की गई है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5) प्रतिवेदन 2020 में उपलब्ध विविध आंकड़ों का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रपत्र की अध्ययन विधि विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक है। आंकड़ों के विश्लेषण में तालिका एवं सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। जिसमें विभिन्न रेखाचित्र एवं सारणी का उपयोग किया गया है।

संत कबीर नगर जनपद के लिंगानुपात का तुलनात्मक अध्ययन

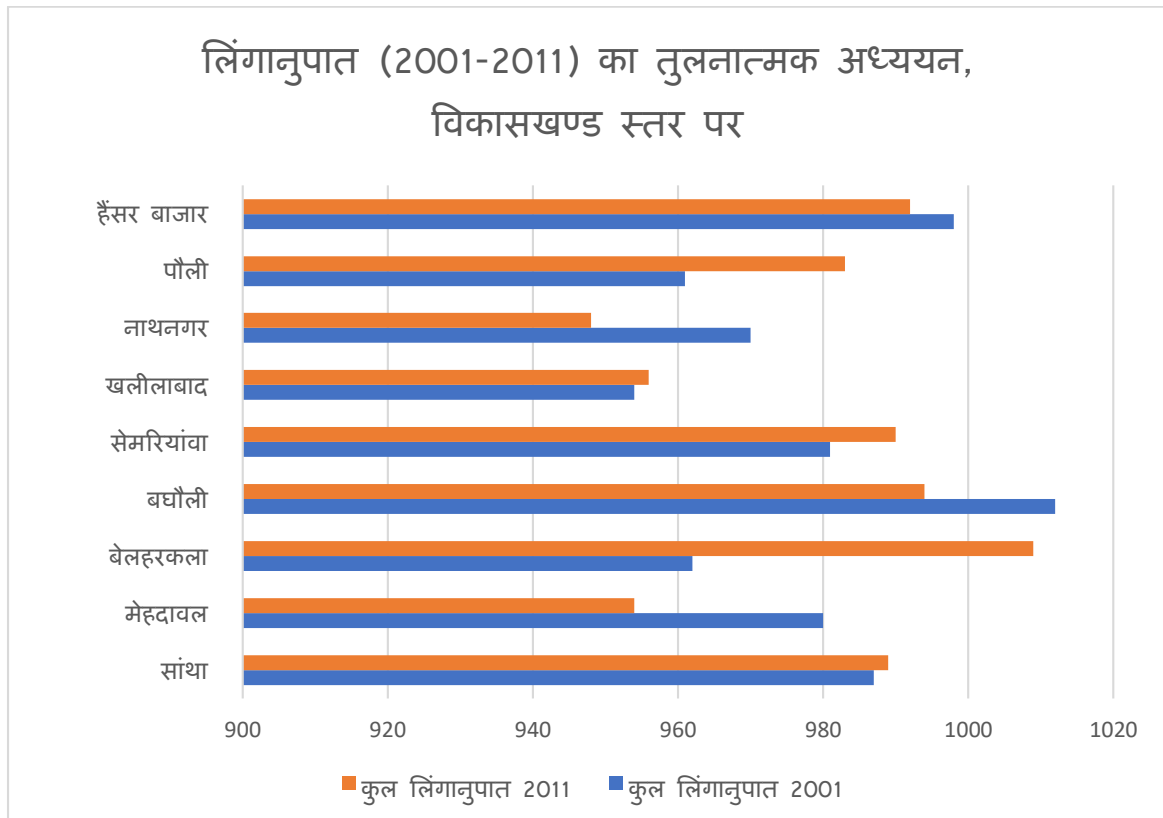
अध्ययन क्षेत्र में प्राप्त लिंगानुपात संबंधित आंकड़ों का तुलना करने के उपरांत पाया गया कि वर्ष 2001 में सर्वाधिक लिंगानुपात बघौली विकासखंड में 1000 पुरुषों पर 1012 महिलाओं की संख्या है। सबसे कम पौली विकासखंड में 1000 पुरुषों पर 961 महिलाएं हैं। इसके बाद क्रमशः घटते क्रम में 2001 के अनुसार हैंसर बाजार (998), सांथा (987), सेमरियावां (981) एवं मेहदावल (980) लिंगानुपात है। 2011 के अनुसार जनपद में सर्वाधिक लिंगानुपात बेलहरकला (1009) में है तथा सबसे कम नाथनगर (948) में है। इसके उपरांत दूसरे स्थान पर बघौली (994) तथा तीसरे स्थान पर हैंसर बाजार (992) विकासखंड स्थित है।

नीचे दिए गए सारणी 1 में वर्ष 2001 से 2011 में तुलना करने पर सर्वाधिक लिंगानुपात में धनात्मक वृद्धि 47 बेलहरकला विकासखंड में हुई है जबकि सर्वाधिक कमी मेहदावल विकासखंड में -26 दर्ज की गई है। इसके बाद क्रमशः वृद्धि पौली में 22 और सेमरियावां विकासखंड में 9 का स्थान आता है।

सारणी : 1 संत कबीर नगर लिंगानुपात (2001 – 2011 का तुलनात्मक अध्ययन विकासखंड स्तर पर)

विकासखंड	कुल लिंगानुपात		2001-2011 में लिंगानुपात में अन्तर
	2001	2011	
1. सांथा	987	989	+2
2. मेहदावल	980	954	-26
3. बेलहरकला	962	1009	+47
4. बघौली	1012	994	-18
5. सेमरियावां	981	990	+9
6. खलीलाबाद	954	956	+2
7. नाथनगर	970	948	-22
8. पौली	961	983	+22
9. हैंसर बाजार	998	992	-6

स्रोत : जनगणना हस्त पुस्तिका संत कबीर नगर 2001 व 2011



चित्र सं. 2

जनपद में विकासखण्ड स्तर पर साक्षरता में लैंगिक असमानता

समाज के विभिन्न क्षेत्रों में आज भी लैंगिक असमानता स्पष्ट रूप से प्रतीत होती है। शिक्षा भी उन्हीं क्षेत्रों में से एक है जो अभी भी लैंगिक असमानता से प्रभावित है। अध्ययन क्षेत्र में भी सभी विकासखण्डों में आंकड़ों के माध्यम से लैंगिक असमानता प्रत्यक्ष रूप से प्रसंत कबीर नगर जिले के दर्शित होती है। जिसका आगे विस्तृत विवेचन किया गया है।

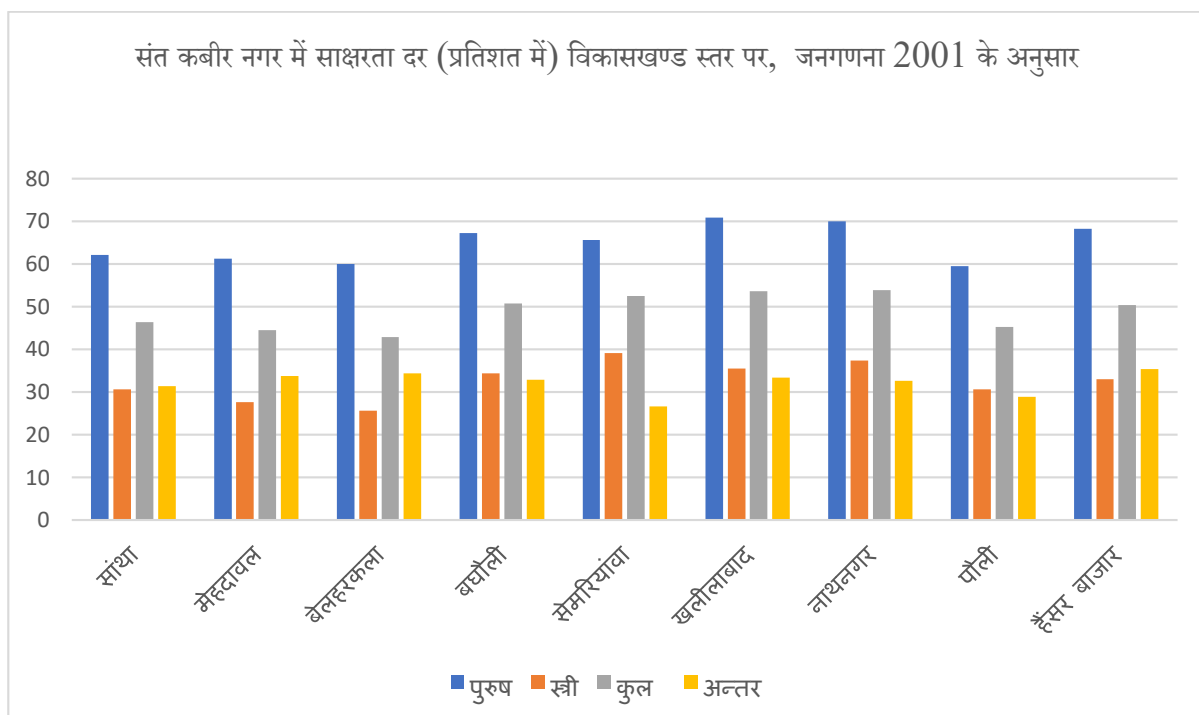
सारणी : 2 संत कबीर नगर जनपद के विकासखण्डों में लैंगिक साक्षरता दर

क्र. सं.	विकासखण्ड	साक्षरता (% में) जनगणना 2001			साक्षरता अन्तर	साक्षरता (% में) जनगणना 2011			साक्षरता अन्तर
		पुरुष	स्त्री	कुल		पुरुष	स्त्री	कुल	
1.	सांथा	62.05	30.66	46.36	31.39	74.22	49.98	62.09	24.24
2.	मेहदावल	61.27	27.58	44.53	33.69	71.53	46.53	59.30	25.00
3.	बेलहरकला	59.95	25.56	42.89	34.39	73.64	48.29	60.84	25.35
4.	बघौली	67.21	34.38	50.73	32.83	80.38	54.87	67.58	25.51
5.	सेमरियावा	65.61	39.06	52.43	26.55	77.29	57.50	67.47	19.79
6.	खलीलाबाद	70.80	35.47	53.53	33.33	83.80	58.04	71.21	25.76
7.	नाथनगर	69.97	37.34	53.83	32.63	82.04	57.03	69.84	25.01
8.	पौली	59.47	30.63	45.21	28.84	74.81	52.85	63.90	21.96
9.	हैंसर बाजार	68.20	32.91	50.36	35.29	79.02	53.90	66.42	25.12

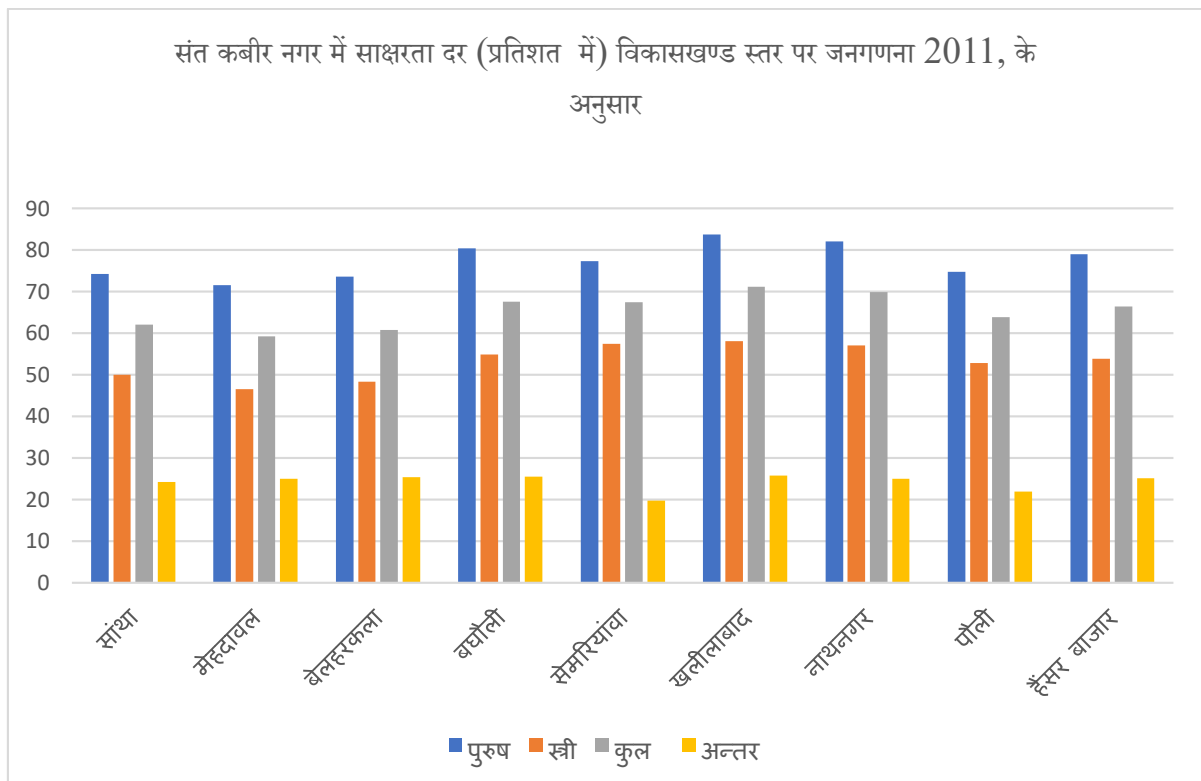
	योग ग्रामीण	65.73	33.43	49.67	32.30	78.03	53.84	66.03	24.19
	योग नगरीय	76.86	54.87	66.39	21.99	82.71	66.84	75.12	15.87
	योग जनपद	66.57	34.92	50.88	31.65	78.37	54.74	66.68	23.63

स्रोत : जिला जनगणना हस्त पुस्तिका संत कबीर नगर (2001 एवं 2011)

संत कबीर नगर जनपद में 2001 की जनगणना के अनुसार कुल साक्षरता 50.88% था किन्तु 2011 में यह बढ़कर 66.68% हो गया। जो 15.80% साक्षरता की वृद्धि प्रदर्शित कर रहा है। 2001 में नाथनगर विकासखण्ड में सर्वाधिक साक्षरता 53.83% तथा सबसे कम साक्षरता 42.89% बेलहरकला विकासखण्ड में था। 2011 की जनगणना में सर्वाधिक साक्षरता 71.21% खलीलाबाद विकासखण्ड में तथा न्यूनतम साक्षरता 59.30% मेहदावल विकासखण्ड में है।



चित्र सं.3



चित्र सं.4

उपरोक्त सारणी 2 के अनुसार 2001 में सर्वाधिक पुरुष साक्षरता 70.80% खलीलाबाद विकासखण्ड में तथा सबसे अधिक महिला साक्षरता 39.06% सेमरियावा विकासखण्ड में था। जबकि सर्वाधिक स्त्री-पुरुष साक्षरता में असमानता 35.29% हैसर बाजार विकासखण्ड में था। 2011 में सर्वाधिक पुरुष साक्षरता 83.80% एवं सर्वाधिक महिला साक्षरता 58.04% खलीलाबाद में है जबकि स्त्री-पुरुष साक्षरता में सर्वाधिक असमानता 25.76% खलीलाबाद विकासखण्ड में है। इसके बाद क्रमशः दूसरे 25.51% बघौली तथा तीसरे 25.35% बेलहरकला का स्थान है।

साक्षरता में लैंगिक असमानता के कारण

देश की साक्षरता में लैंगिक असमानता के जितने कारण हैं लगभग वही कारण अध्ययन क्षेत्र संत कबीर नगर में भी हैं। साक्षरता में लैंगिक असमानता के कई जटिल कारण हैं, जो मुख्य रूप से सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक रूप से जुड़े हैं। जिनमें कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार दिए गए हैं :

- पितृसत्तात्मक और रूढ़िवादी सोच :** अध्ययन क्षेत्र के कुछ इलाकों में अभी भी पितृसत्तात्मक मानसिकता लड़कों को परिवार का वंश चलाने तथा भविष्य में कमाने वाला मानती है, जिस वजह से लड़कियों की तुलना में लड़कों को शिक्षा में अधिक प्राथमिकता दी जाती है।
- परंपरागत लिंग आधारित भूमिका :** यह सोच लड़कियों को मुख्यतः घर संभालने एवं बच्चों की देखभाल करना ही उचित मानती है, जिससे उनकी जल्दी विवाह के कारण कम उम्र में ही पढ़ाई छूट जाती है।
- सुरक्षा चिंता एवं आवागमन की परेशानी :** लड़कों की अपेक्षा लड़कियों को उनके माता-पिता दूर के स्कूलों-कॉलेजों में भेजने से डरते हैं, विशेषकर उच्च शिक्षा हेतु।
- गरीबी एवं सीमित संसाधन :** इस दशा में लड़के की शिक्षा में खर्च को निवेश माना जाता है जबकि लड़की की शिक्षा में खर्च को बोझ समझा जाता है। इसीलिए लड़कियों की पढ़ाई बीच में ही छूट जाती है।

5. स्कूलों में आधारभूत सुविधा की कमी : लड़कियों के लिए सुरक्षित एवं अलग शौचालय की कमी उन्हें कम उम्र में ही स्कूल छोड़ने पर मजबूर कर देती है।

6. उच्च शिक्षा एवं तकनीकी विषयों में कम भागीदारी : अध्ययन क्षेत्र में पर्याप्त उच्च शिक्षण संस्थान की कमी एवं लड़कियों की तकनीकी विषयों जैसे गणित, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में कम भागीदारी होना, उन्हें शिक्षा में सीमित अवसर प्रदान करते हैं।

साक्षरता में लैंगिक असमानता को कम करने के उपाय

साक्षरता में लैंगिक असमानता को कम करने के लिए व्यक्तिगत, सामुदायिक एवं सरकारी योजनाओं के माध्यम से प्रयास किये जा रहे हैं। जिनमें कुछ उपाय निम्न बिन्दुओं के द्वारा समझे जा सकते हैं :

1. संत कबीर नगर जिले के खलीलाबाद, बघौली एवं बेलहरकला विकासखंडों में जागरूकता अभियान एवं रुढ़िवादी सोच में बदलाव की विशेष जरूरत है।
2. जिले के हेंसर बाजार और नाथनगर विकासखण्ड में प्रचलित निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा को और प्रभावी ढंग से लागू करने की आवश्यकता है जिससे छात्राओं का पढ़ाई के प्रति रुझान बढ़े।
3. अध्ययन क्षेत्र के सभी विकासखंडों में यह पाया गया है कि यदि छात्रवृत्तियां एवं आर्थिक प्रोत्साहन मेधावी छात्राओं को दिया जाए तो छात्राओं के नामांकन को बढ़ाया जा सकता है।
4. अध्ययन क्षेत्र के सभी विकासखंडों के शिक्षण संस्थानों में सुरक्षित एवं अनुकूल वातावरण की विशेष आवश्यकता है।
5. संत कबीर नगर जिले के सभी विकासखंडों में लैंगिक समानता आधारित पाठ्यक्रम को बढ़ावा देने की आवश्यकता है जिससे छात्राओं के नामांकन को बढ़ाया जा सकता है।
6. संत कबीर नगर जिले के ऐसे विकासखण्ड जिसमें विद्यालय अधिक दूरी पर अवस्थित हैं वहाँ परिवहन की सुविधा को बढ़ाया जाना चाहिए।
7. जिल के किसी महिला अधिकारी, डॉक्टर, शिक्षक या अन्य रोल मॉडल को प्रेरणा के रूप में विद्यालय में आमंत्रित किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

संत कबीर नगर जनपद उत्तर प्रदेश के पूर्वी मैदानी भाग में स्थित होने के कारण एक कृषि प्रधान क्षेत्र है तथा यहाँ पर कृषि अर्थव्यस्था का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है। विभिन्न सरकारी एवं निजी स्कूलों ने शिक्षा को बढ़ावा दिया है जिससे अध्ययन क्षेत्र में 2001 की जनगणना के अनुसार महिला साक्षरता 34.92% थी। जो 19.82% अंको की वृद्धि करते हुए 2011 में महिला साक्षरता 54.74% तक पहुंच गयी। 2001 में पुरुष साक्षरता 66.57% थी जो 11.80% वृद्धि करके 78.37% तक हो गयी। इस प्रकार महिला और पुरुष साक्षरता में बड़ा अन्तर प्रतीत होता है जो 2001 में 31.65% अन्तर था वह 2011 में घटकर 23.63% हो गया है। हालांकि कुछ विकासखण्ड ऐसे हैं जो जागरूकता की कमी एवं गरीबी के कारण पिछड़े हैं। 2011 जनगणना के अनुसार खलीलाबाद, बघौली एवं बेलहरकला विकासखण्ड में साक्षरता में लैंगिक असमानता अधिक है तथा सेमरियावा एवं पौली विकासखण्ड में स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी है।

सन्दर्भ सूची :

1. Chandana, R.C.,2009, Jansankhya Bhoogol, Kalyani Publication, New Delhi, pp.160.
2. Yadav, Harsh Raj (2020) Block Level Gender Disparity in Literacy of Gorakhpur District, Uttar Pradesh: A Geographical Analysis, IJRAR November 2020, Volume 7, Issue 4, pp. 254-263.
3. जिला सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद संत कबीर नगर ।
4. जिला हस्त पुस्तिका (2001) : संत कबीर नगर ।
5. जिला हस्त पुस्तिका (2011) : संत कबीर नगर ।
6. www.censusindia.gov.in
7. www.sknnagar.nic.in

